संपादक का नोट

मसीह में प्रिय भाइयों और बहनों प्रभु की स्तुति करो। आने वाले महीने में, मैं आशा और प्रार्थना करती हूं कि आप में से प्रत्येक हमारे उद्धारकर्ता, यीशु मसीह की शक्तिशाली छाया में रहना जारी रखे!

भजन संहिता 91:11–12 ''क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा, कि जहाँ कहीं तू जाए वे तेरी रक्षा करें। वे तुझ को हाथों हाथ उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तेरे पाँवों में पत्थर से ठेस लगे।''

इस दुनिया में हम जिस दर्द और कष्ट का सामना करते हैं, हमें उस से कमजोर नहीं पड़ना चाहिए, बल्कि हमें उसे बदलना चाहिए और मसीह में अपने विश्वास को मजबूत करना चाहिए। जब परमेश्वर देखते है कि हमारा विश्वास उनमें है, यहां तक कि हमारे कष्टों के दौरान भी, वह अपनी दया की बौछार हम पर करते है और अपने अधिक अनुग्रह से हमें बचाते है। जब हम अपने विश्वास में दृढ़ हो जाते हैं, तब परमेश्वर हमसे दूर नहीं होते; वह हमें हर उस परिस्थिति में जीत दिलाएंगे जिसका हम सामना करते हैं और एक बार फिर से हमारे जीवन में सभी आशीषों को पुनर्स्थापित करेंगे।

मरकुस 13:13 ''और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे; पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।''

कठिन परिस्थितियों में, विश्वास खोना और परमेश्वर के विरुद्ध कुड़कुड़ाना बहुत आसान है। दरअसल, शैतान इसी का इंतज़ार कर रहा है। अय्यूब के जीवन में, उसकी पत्नी के माध्यम से, शैतान ने अय्यूब से उसके जीवन की सभी दुर्घटनाओं के लिए परमेश्वर को दोष देने की कोशिश की। फिर भी, उस समय भी जब अय्यूब ने सब कुछ खो दिया, उसने परमेश्वर को दोष नहीं दिया। उसने प्रभु पर भरोसा किया और अंत में विजयी हुआ। इसी तरह, हमारे जीवन में, जब हम मुसीबत का सामना करते हैं, तो जान लें कि परमेश्वर हमारा छुड़ाने वाला जीवित है, और वह हमें संभालेगा और हमारे सभी कष्टों में हमें जयवंत करेगा।

हमारा हृदय क्रूस पर केन्द्रित होना चाहिए, तब हमारा सारा अपमान कुछ भी नहीं होगा। पवित्र बाईबल में उल्लेखित लोगों से हमें साहस जुटाना चाहिए और हमेशा याद रखना चाहिए कि यदि वे अपने मानव रूप में मुसीबतों का सामना कर सकते हैं और विजयी हो सकते हैं, तो हम अपने–अपने जीवन में भी कर सकते हैं।

फिलिप्पियों 4:4–7 ''प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूँ, आनन्दित रहो। तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों पर प्रगट हो। प्रभु निकट है। किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ। तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।''

हमेशा हर स्थिति में प्रभु में आनंदित रहें, और भरोसा रखें कि प्रभु हमें उतना ही देंगे जितना हम सहन कर सकते हैं। इस दौरान, हमें परमेश्वर के साथ अपने संबंध को कभी नहीं भूलना चाहिए।

शैतान हमेशा चाहता है कि हम कुड़कुड़ाएं, जीवन में क्रोधित हों और परमेश्वर को कोसें। परन्तु परमेश्वर का वचन कहता है, 'प्रभु में सदा आनन्दित रहो।'

भजन संहिता 139:8–11 ''यदि मैं आकाश पर चढ़ूँ, तो तू वहाँ है! यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊँ तो वहाँ भी तू है! यदि मैं भोर की किरणों पर चढ़कर समुद्र के पार जा बसूँ, तो वहाँ भी तू अपने हाथ से मेरी अगुवाई करेगा, और अपने दाहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा। यदि मैं कहूँ कि अन्धकार में तो मैं छिप जाऊँगा, और मेरे चारों ओर का उजियाला रात का अन्धेरा हो जाएगा,''

हमें यह महसूस करना चाहिए कि पृथ्वी पर ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ हम अपने परमेश्वर से छिप सकें; क्योंकि चाहे हम गहरे समुद्र में हों, चाहे आकाश पर चढ़े, हमारे परमेश्वर हमें हर जगह देखते है। इसलिए, हमें भय और धन्यवाद के साथ अपने सारे दर्द और आनंद को परमेश्वर के चरणों में ले जाना चाहिए, भरोसा करना चाहिए और विश्वास करना चाहिए कि समय आने पर वह हमें बचाएंगे और छुड़ाएंगे, और हमें उन आशीषों की ऊंचाइयों तक ले जाएंगे जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

इसलिए, परमेश्वर के प्यारे बच्चों, चाहे आप अपने जीवन में किसी भी स्थिति का सामना कर रहे हों, बस स्पष्ट रूप से और आँख बंद करके अपने पूरे दिल, दिमाग और आत्मा से परमेश्वर पर भरोसा करें, और वह सब कुछ संभाल लेंगे, और एक बार फिर से आपके जीवन को पुनर्स्थापित कर देंगे। यह हमारे जीवित परमेश्वर, यीशु की ओर से एक वादा है!

मसीह में आपकी बहन,

पास्टर सरोजा म।

1 इतिहास 19:13 ''तू हियाव बाँध और हम सब अपने लोगों और अपने परमेश्वर के नगरों के निमित्त पुरुषार्थ करें; और यहोवा जैसा उसको अच्छा लगे, वैसा ही करेगा।'' जब हम अपने जीवन को साहस के साथ जीते हैं और प्रभु में बलवन्त होते हैं, तो हम अपने जीवन में बहुत सी विजय प्राप्त कर सकते हैं। हम अपनी आत्मारिकता को भी बचा सकते हैं, और परमेश्वर के नाम को महिमा ला सकते हैं। बाइबिल में, हम यूसुफ के जीवन को देखते हैं; उसने प्रभु के साथ एक मजबूत और साहसी जीवन जिया, इसलिए वह अपनी आत्मारिकता को बनाए रख सका और पाप के प्रलोभन से दूर भाग सका, जिससे उसके जीवन में परमेश्वर के नाम की महिमा हुई। परमेश्वर के लोगों में कभी भी दोषी विवेक नहीं होना चाहिए। 1 यूहन्ना 3:21–22 ''हे प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोष न दे, तो हमें परमेश्वर के सामने हियाव होता है; और जो कुछ हम माँगते हैं, वह हमें उससे मिलता है, क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं और जो उसे भाता है वही करते हैं।'' हमारे दिलों में कभी भी हमारी निंदा करने का कोई कारण नहीं होना चाहिए। जब हम परमेश्वर में विश्वास करते हैं और अपने आप को पूरी तरह से उसके हाथों में सौंप देते हैं, तो हम कभी भी निंदित नहीं होंगे। तब परमेश्वर हमारी रक्षा करेंगे, और जब हम उनके नाम से कुछ मांगेंगे, तो वह हमें आशीष देंगे; जैसे हम उनकी आज्ञा मानते हैं और उनकी इच्छा पूरी करते हैं। यशायाह 48:22 में, हम पढ़ते हैं कि यहोवा कहता है, *'दुष्टों को शांति नहीं मिलती।'* हम सांत्वना और शांति प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन केवल तभी जब हम अपने पापों और अधर्मों को स्वीकार करें और उन्हें परमेश्वर के हाथों में सौंप दें। हमें शांति तब मिलेगी जब परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा कर देंगे और उन्हें फिर कभी याद नहीं करेंगे। हमारे अपराध और लज्जा को हमसे दूर कर दिया जाएगा और हम एक बार फिर से प्रभु में साहसी और मजबूत हो सकते हैं।

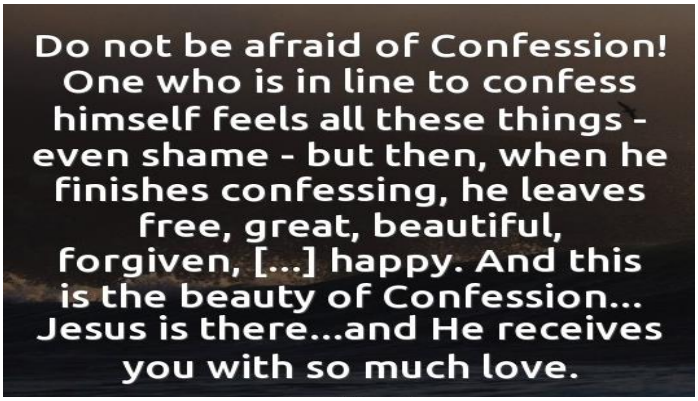

प्रेरितों के काम 28:31 ''और जो उसके पास आते थे, उन सबसे मिलता रहा और बिना रोक–टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा।''

प्रेरित पौलुस ने बड़े साहस के साथ और बिना किसी बाधा के परमेश्वर के बारे में प्रचार किया, क्योंकि वह प्रभु के लिए साहसी था। जब हम स्वयं को परमेश्वर के हाथों में सौंप देते हैं, उन पर विश्वास करते हैं, और उनके लहू से धोए जाते हैं, तब हम उनकी आत्मा से भर जाएंगे, और हम अपने जीवन में साहसी बन जाएंगे। हम पर परमेश्वर का अनुग्रह होगा, और हम जो कुछ भी चाहते हैं, वह हमारे जीवन में पूरा करेंगे। इब्रानियों 10:19 ''इसलिये हे भाइयो, जब हमें यीशु के लहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्रस्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है,'' हम जीवन में तभी साहसी बनते हैं जब हम परमेश्वर के लहू से धोए जाते हैं।

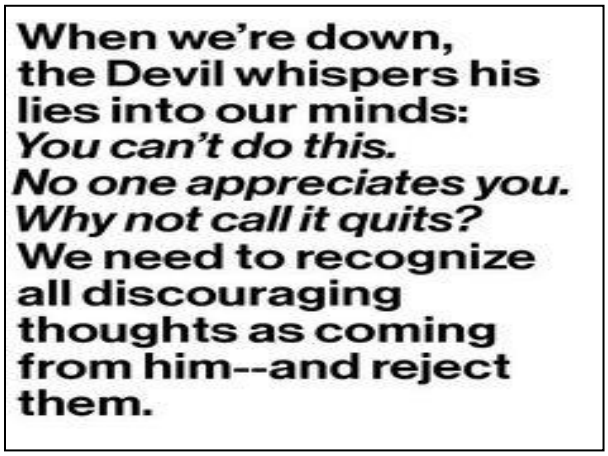

पुराने करार में, हम कर्मेल पर्वत पर एलिय्याह की विजय की कहानी जानते हैं, जहाँ भविष्यवक्ता एलिय्याह ने बाल के भविष्यद्वक्ताओं को चुनौती दी थी। उसने उनसे कहा कि वे अपने देवताओं को पुकारें कि वे उनके सामने रखी गई बलि का सेवन करें। हालाँकि, बाल के भविष्यद्वक्ता एलिय्याह द्वारा उनके सामने रखी गई इस चुनौती में सफल नहीं हुए। बाइबिल के शुरुआती दिनों में, हमने उन चमत्कारों को देखा है जो मूसा ने किए थे, जिनका फिरौन के जादूगरों ने अनुकरण किया था। मूसा ने अपनी लाठी को साँप में बदल दिया, और फ़िरौन के जादूगरों ने भी अपनी लाठी से लाठी को साँप में बदल दिया। मूसा के द्वारा, परमेश्वर ने पानी को लहू में बदल दिया, जो जादूगरों ने भी वैसा ही किया। अलग–अलग तरीकों से, शैतान ने परमेश्वर के चमत्कारों की नकल की। लेकिन यहाँ हम देखते हैं कि कैसे भविष्यद्वक्ता एलिय्याह के सामने, बाल के भविष्यवक्ता एलिय्याह के समान चमत्कार नहीं कर सकते थे। 1 राजा 18:27 में भविष्यद्वक्ता एलिय्याह ने बाल के भविष्यद्वक्ताओं को ठट्ठा किया, ''दोपहर को एलिय्याह ने यह कहकर उनका ठट्ठा किया, "ऊँचे शब्द से पुकारो, वह तो देवता है; वह तो ध्यान लगाए होगा, या कहीं गया होगा, या यात्रा में होगा, या हो सकता है कि सोता हो और उसे जगाना चाहिए।'' बाल के देवताओं ने झूठे भविष्यद्वक्ताओं को उत्तर न दिया, और चमत्कार न कर सके। इसके बाद नबी एलिय्याह ने लोगों से कहा, *'आइए हम अपने परमेश्वर की स्तुति करें और उन्हें पुकारें। एक वेदी बनाना, और बलिदान को बहुत टुकड़े टुकड़े करना, और वेदी के चारों ओर एक गड़हा बनाना, कि उस में जल समा सके।'* एलिय्याह ने अपने लोगों से बलिदान पर पर्याप्त पानी डालने के लिए क्यों कहा? झूठे भविष्यद्वक्ता, टोन्हें करनेवाले और जादूगर लोगों को मूर्ख बनाते थे और दुष्ट तरीकों से पत्थरों में से आग को बलिदान पर ले आते थे। भविष्यद्वक्ता एलिय्याह यह जानता था, इसलिए उसने लोगों से बलिदान के चारों ओर जल डालने को कहा। अब, विश्वास और साहस में, एलिय्याह ने परमेश्वर को पुकारा और परमेश्वर ने बलिदान को भस्म करने के लिए स्वर्ग से आग भेजी। सब कुछ भस्म हो गया और खाई का पानी

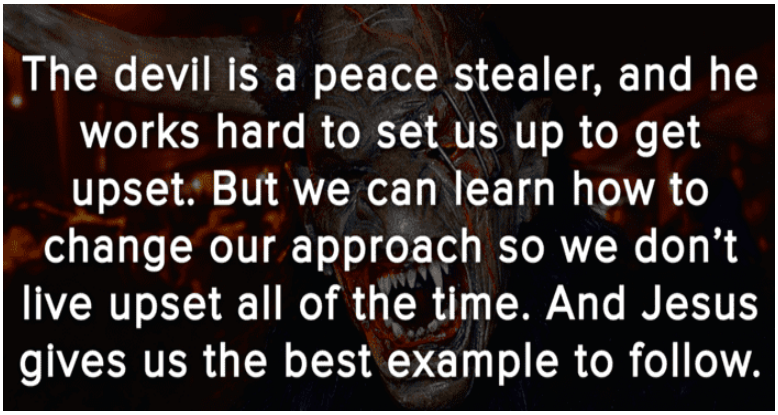

भी सूख गया। याद रखें, जब हम अपने आप को पूरी तरह से परमेश्वर के हाथों में सौंप देते हैं तो हम कभी भी दोषी नहीं ठहराए जा सकते।

1 यूहन्ना 3:21–22 ''हे प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोष न दे, तो हमें परमेश्वर के सामने हियाव होता है; और जो कुछ हम माँगते हैं, वह हमें उससे मिलता है, क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं और जो उसे भाता है वही करते हैं।'' जब हम उनके नाम से कुछ मांगते हैं, तो परमेश्वर हमें आशीष देंगे और हमें प्रदान करेंगे, यदि हम ने उनकी आज्ञा मानी हो और उनकी इच्छा पूरी की हो। भविष्यद्वक्ता एलिय्याह में कोई दोष नहीं था, और वह परमेश्वर यहोवा के नाम से साहसी और निडर से खड़ा रहा। 1 राजा 18:33–38 ''तब उसने वेदी पर लकड़ी को सजाया, और बछड़े को टुकड़े टुकड़े काटकर लकड़ी पर रख दिया, और कहा, "चार घड़े पानी भर के होमबलि–पशु और लकड़ी पर उण्डेल दो।" तब उसने कहा, "दूसरी बार वैसा ही करो;" तब लोगों ने दूसरी बार वैसा ही किया। फिर उसने कहा, "तीसरी बार करो;" तब लोगों ने तीसरी बार भी वैसा ही किया। और जल वेदी के चारों ओर बह गया, और गड़हे को भी उसने जल से भर दिया। फिर भेंट चढ़ाने के समय एलिय्याह नबी समीप जाकर कहने लगा, "हे अब्राहम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! आज यह प्रगट कर कि इस्राएल में तू ही परमेश्वर है, और मैं तेरा दास हूँ, और मैं ने ये सब काम तुझ से वचन पाकर किए हैं। हे यहोवा! मेरी सुन, मेरी सुन कि लोग जान लें कि हे यहोवा, तू ही परमेश्वर है, और तू ही उनका मन लौटा लेता है।" तब यहोवा की आग आकाश से प्रगट हुई और होमबलि को लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म कर दिया, और गड़हे में का जल भी सुखा दिया।''

Conviction vs. Condemnation:

Condemnation:
- Comes from Satan
- Is vague
- Brings worthlessness and hopelessness
- Causes guilt
- Makes you want to hide from God

Conviction:
- Comes from the Holy Spirit
- Is specific
- Brings hope and a way to overcome
- Endorses your value in God
- Produces a desire for obedience to God

Listening to condemnation is not worth your time.

अपने शत्रुओं के सामने, हमारे हृदय में परमेश्वर के कार्यों के लिए साहस और निडरता होनी चाहिए। इस साहस को हासिल करने के लिए हमें अपने अपराध को दूर करने की जरूरत है। अपने अपराध से खुद को मुक्त करने के इस कार्य के बिना, हम कभी भी सफलता या जीत हासिल नहीं कर पाएंगे। नए नियम में, हम देखते हैं कि परमेश्वर के चेले उनके नाम पर आश्चर्यकर्म करते हैं, परन्तु शैतान के चेले भी इसी प्रकार के चमत्कार बड़ी सामर्थ्य से करते हैं; लेकिन, अंत में, जीत केवल प्रभु की होती है। आरंभ से ही, हमने देखा है कि शैतान परमेश्वर के कार्यों की नकल करता है।

एलिय्याह ने शैतान को चमत्कार करने की अनुमति नहीं दी, और इसके बजाय, हमारे प्रभु परमेश्वर के नाम की महिमा हुई। एलिय्याह ने 1 राजा 18:36–38 में कहा ''फिर भेंट चढ़ाने के समय एलिय्याह नबी समीप जाकर कहने लगा, "हे अब्राहम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! आज यह प्रगट कर कि इस्राएल में तू ही परमेश्वर है, और मैं तेरा दास हूँ, और मैं ने ये सब काम तुझ से वचन पाकर किए हैं। हे यहोवा! मेरी सुन, मेरी सुन कि लोग जान लें कि हे यहोवा, तू ही परमेश्वर है, और तू ही उनका मन लौटा लेता है।" तब यहोवा की आग आकाश से प्रगट हुई और होमबलि को लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म कर दिया, और गड़हे में का जल भी सुखा दिया।'' स्वर्ग से आग ने मिट्टी और पत्थरों से बनी वेदी को बलिदान समेत भस्म कर दिया, जिसे उसने पानी से पूरी तरह सुखा दिया। इसी तरह, प्रभु में हमारा विश्वास मजबूत होना चाहिए, क्योंकि प्रभु का प्रेम, उनके कार्य, उनकी इच्छा और हमारे लिए उनकी योजनाएं इस दुनिया में किसी भी तुलना से परे हैं। हमें इस सत्य को जानना चाहिए, इसे समझना चाहिए और इसे अपने जीवन में स्वीकार करना चाहिए, तभी हमारे प्रभु परमेश्वर हमें आशीष दे सकते है। हमारे लिए, हमारा परमेश्वर स्वर्ग से आग भेजते है। यह इस दुनिया की साधारण आग नहीं है, बल्कि यह स्वर्ग से उसकी आग है। जब एलिय्याह ने परमेश्वर को पुकारा तब यह आग गिरी, और उस से वेदी, और बलिदान, और लकड़ी, और पत्थर भस्म हुए, और जल भी सुख गया। 1 राजा 18:38–40 ''तब यहोवा की आग आकाश से प्रगट हुई और होमबलि को लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म कर दिया, और गड़हे में का जल भी सुखा दिया। यह देख सब लोग मुँह के बल गिरकर बोल उठे, "यहोवा ही परमेश्वर है, यहोवा ही परमेश्वर है;" एलिय्याह ने उनसे कहा, "बाल के नबियों को पकड़ लो, उनमें से एक भी छूटने न पाए;" तब उन्होंने उनको पकड़ लिया, और एलिय्याह ने उन्हें नीचे किशोन के नाले में ले जाकर मार डाला।'' इस अद्भुत चमत्कार को देखकर लोगों ने घोषणा की, *'यहोवा ही परमेश्वर है, यहोवा ही परमेश्वर है।'* इसके बाद, एलिय्याह ने बाल के सभी नबियों को पकड़ लिया और उन्हें सताया। ये झूठे भविष्यद्वक्ता इस्राएल में एक संकटपूर्ण दल

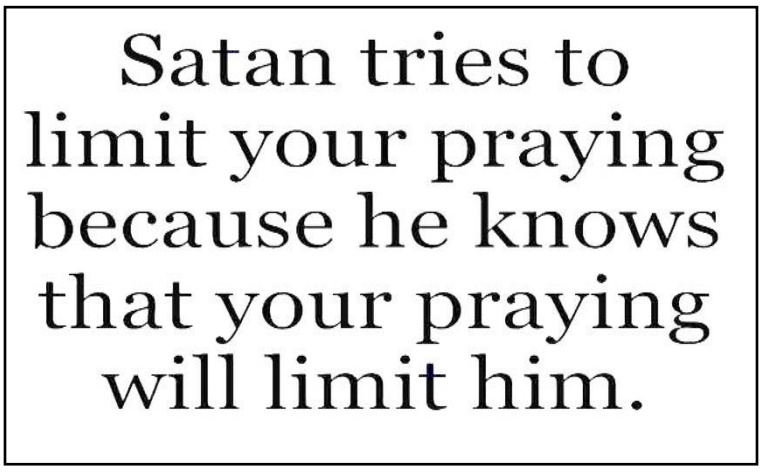

थे; वे तो जादूगर और टोनहे करनेवाले थे, और उन्होंने अपने बुरे कामों से इस्राएलियों का प्राण नाश किया, इसलिए एलिय्याह ने उन्हें मार डालने की आज्ञा दी।

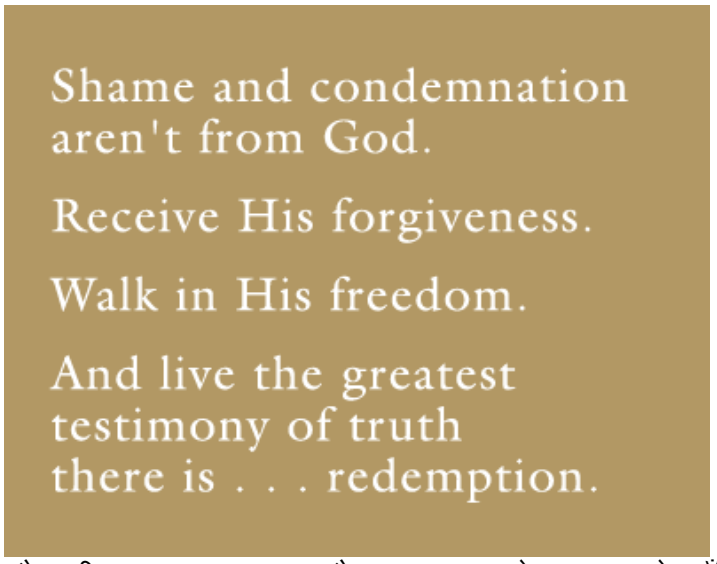

1 राजा 18:36–37 ''फिर भेंट चढ़ाने के समय एलिय्याह नबी समीप जाकर कहने लगा, "हे अब्राहम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! आज यह प्रगट कर कि इस्राएल में तू ही परमेश्वर है, और मैं तेरा दास हूँ, और मैं ने ये सब काम तुझ से वचन पाकर किए हैं। हे यहोवा! मेरी सुन, मेरी सुन कि लोग जान लें कि हे यहोवा, तू ही परमेश्वर है, और तू ही उनका मन लौटा लेता है।'' हम जानते हैं कि एलिय्याह ने यह सब परमेश्वर की इच्छा के अनुसार किया। परमेश्वर किसी को भी नहीं बख्शेगा जो इस्राएलियों के लिए विनाश, दुःख और पीड़ा लाना चाहता है। हमारा परमेश्वर न तो ऊँघता है और न ही सोता है, परन्तु वह अपने बच्चों पर सदैव दृष्टि रखता है। हम उनकी आंखों के तारे हैं, इसलिए हमें कभी भी किसी अपराध को हमें दबाने नहीं देना चाहिए। अपने सारे दोष परमेश्वर के हाथों में सौंप दो, तभी तुम अपने जीवन में साहसी बन पाओगे।

1 इतिहास 17:25 ''क्योंकि हे मेरे परमेश्वर, तू ने यह कहकर अपने दास पर प्रगट किया है कि मैं तेरा घर बनाए रखूँगा, इस कारण तेरे दास को तेरे सम्मुख प्रार्थना करने का हियाव हुआ है।'' दाऊद ने स्मरण किया कि परमेश्वर ने उसके जीवन में क्या किया, और उसके लिए प्रार्थना करने के लिए उसे अपने हृदय में पाया। इस बात ने दाऊद को साहसी बनाया। प्रेरितों के काम 4:13 ''जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का साहस देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो आश्चर्य किया; फिर उनको पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं।'' जब लोगों ने पतरस और यहुन्ना के साहस और निडरता को देखा, तो वे अचंभित हो गए, क्योंकि तब तक वे केवल अशिक्षित मछुआरे थे। लोग हैरान थे कि ये इतने साहसी कैसे हो गए और इन अनपढ़ मछुआरों को उपदेश देते देख वे चकित रह गए।

जब हम यीशु के लोगों के साथ होते हैं, तो हमें साहस और निडरता की आशीष मिलती है। हम कालेब और यहोशू के बारे में जानते हैं, जो दोनों परमेश्वर के प्रिय और चुने हुए बच्चे थे। हम नहीं जानते कि परमेश्वर को कौन अधिक प्रिय था – कालेब या यहोशू, परन्तु पुराने करार में लिखा है कि यहोशू ने कालेब के ऊपर प्रार्थना की; उसमें हम जानते हैं कि परमेश्वर ने यहोशू को कालेब के लिए प्रार्थना करने का अधिकार दिया था। इसके द्वारा, हम यह अंतिम परिणाम

निकाल सकते हैं कि यहोशू कालेब से अधिक साहसी था। यहोशू 14:13 ''तब यहोशू ने उसको आशीर्वाद दिया; और हेब्रोन को यपुन्ने के पुत्र कालेब का भाग कर दिया।'' यहोशू ने कालेब को आशीष दी, और परमेश्वर ने यहोशू को अधिक शक्ति, प्रेम और साहस के साथ आशीष दी। हमें यह जानने की आवश्यकता है कि परमेश्वर हमारी अच्छाई या महानता को नहीं देखते; वह हमारे हृदयों को देखते है। वह हमारी आज्ञाकारिता, साहस और उनके प्रति प्रेम को देखते है। इसलिए, प्रभु हमारे जीवन में हमें आशीष देंगे।

1 कुरिन्थियों 15:41 ''सूर्य का तेज और है, चाँद का तेज और है, और तारागणों का तेज और है, (क्योंकि एक तारे से दूसरे तारे के तेज में अन्तर है)।'' चन्द्रमा का तेज सूर्य के तेज से अलग है, जबकि नक्षत्रों का तेज एक दूसरे से अलग है; लेकिन एक तारे का प्रकाश दूसरे तारे के प्रकाश को पहचान सकता है। दानिय्येल 12:3 ''तब सिखानेवालों की चमक आकाशमण्डल की सी होगी, और जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा तारों के समान प्रकाशमान रहेंगे।''

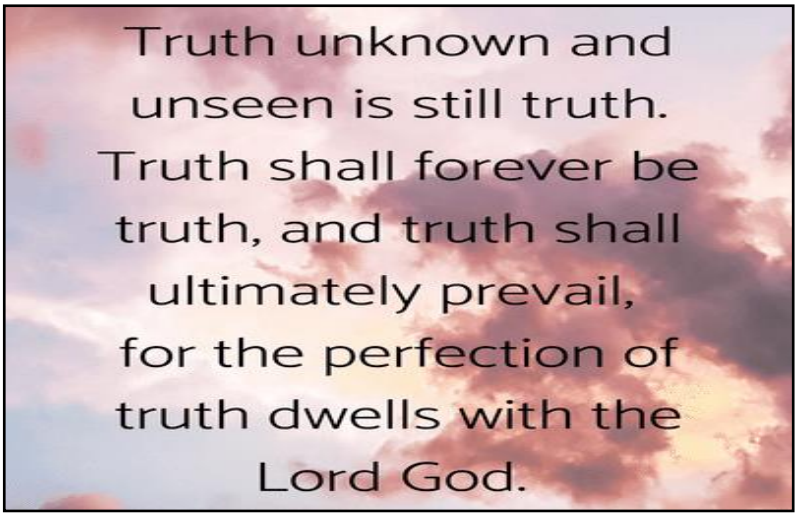

कई साल पहले, बहुत से लोग हमारी सेवकाई के खिलाफ थे और वे हमें या सेवकाई के भीतर के किसी व्यक्ति को जाने बिना, सेवकाई के बारे में व्यर्थ बातें किया करते थे। उन्होंने परमेश्वर के कुछ शक्तिशाली सेवकों से हमारी सेवकाई के विरुद्ध शिकायत भी की। हमने इसके बारे में कुछ नहीं किया, हमने केवल प्रार्थना की और इस समस्या को प्रभु के चरणों में रखा। एक बार, हमारे रोज़ ऑफ़ शेरोन, तमिलनाडु सभा के निर्माण के दौरान तमिलनाडु की यात्रा के दौरान, मैं हवाई अड्डे पर भाई रवींद्रनाथ से मिली। हमने एक दूसरे की ओर देखा और मैंने कहा *'प्रभु की स्तुति हो,'* और उन्होंने भी वैसा ही उत्तर दिया। बाद में, वह उठे और मेरे पास आए, और मुझसे कहा, *'मुझे तुम्हारे भीतर एक उज्ज्वल प्रकाश दिखाई दे रहा है।'* मैंने उत्तर दिया, *'प्रभु की स्तुति हो।'* मुझे उनसे बात करने के लिए लगभग बीस मिनट का समय मिला, और मैंने बहुत से गलत धारणाएं और चिंताजनक बातों को स्पष्ट किया जो उन्होंने हमारी सेवकाई के विरुद्ध सुनी थीं, और उन्होंने प्रतिज्ञा की कि वह मेरे और हमारी सेवकाई के लिए प्रार्थना करेंगे। इस धरती पर एक तारे की चमक ही दूसरे तारे की चमक को पहचान सकती है। जब हमारे पास साहस और निडरता नहीं है, तो हम अपने प्रभु का कार्य नहीं कर सकते हैं और इस संसार में उनके कार्य को आगे नहीं बढ़ा सकते हैं। अपने जीवन में, हमें अपने दोष और विवेक को परमेश्वर के हाथों में सौंप देना चाहिए, तभी हम प्रभु के लिए एक तारे की तरह चमक सकते हैं। जब हमारे भीतर प्रभु का प्रकाश होगा, तो हर कोई हमारे भीतर

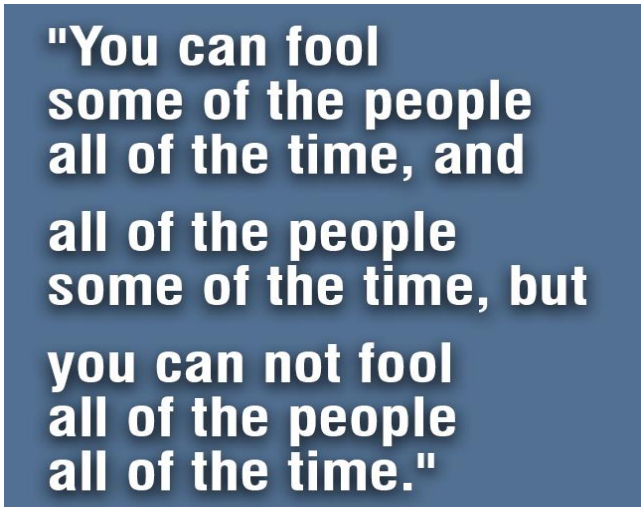

चमकते हुए प्रकाश को देखेगा, और फिर हम इसे दुनिया भर में फैला सकते हैं। इसके बाद भाई रवींद्रनाथ ने हमारे तमिलनाडु रोज ऑफ शेरोन मिनिस्ट्री का उद्घाटन किया, और मुझे उनकी *'जीसस कम्स मिनिस्ट्री'* में प्रचार करने के लिए भी आमंत्रित किया। हमने केवल प्रभु की महिमा के लिए एक रिश्ता बनाए रखा। दुनिया भले ही हमारे भीतर के प्रकाश को न पहचान पाए, लेकिन परमेश्वर के लोग हमारे भीतर के प्रकाश को पहचान सकते हैं।

यीशु मसीह ने अपने १२ शिष्यों को चुना, और उन्होंने इन शिष्यों के साथ सब कुछ किया। उन्होंने साथ–साथ प्रार्थना की, साथ–साथ खाया और साथ–साथ यात्रा की। परन्तु, जब यीशु मसीह के अपनी महिमा दिखाने का समय आया, तो उसने उनमें से केवल तीन को चुना, क्योंकि उन्होंने उन्हें देखने के योग्य समझा। मत्ती 17:1–3 ''छः दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊँचे पहाड़ पर ले गया। वहाँ उनके सामने उसका रूपान्तर हुआ, और उसका मुँह सूर्य के समान चमका और उसका वस्त्र ज्योति के समान उजला हो गया। और मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए।'' यीशु ने अपने शिष्यों में से पतरस, याकूब और यूहन्ना को चुना और उन्हें अपनी महिमा देखने के लिए साथ ले गया।

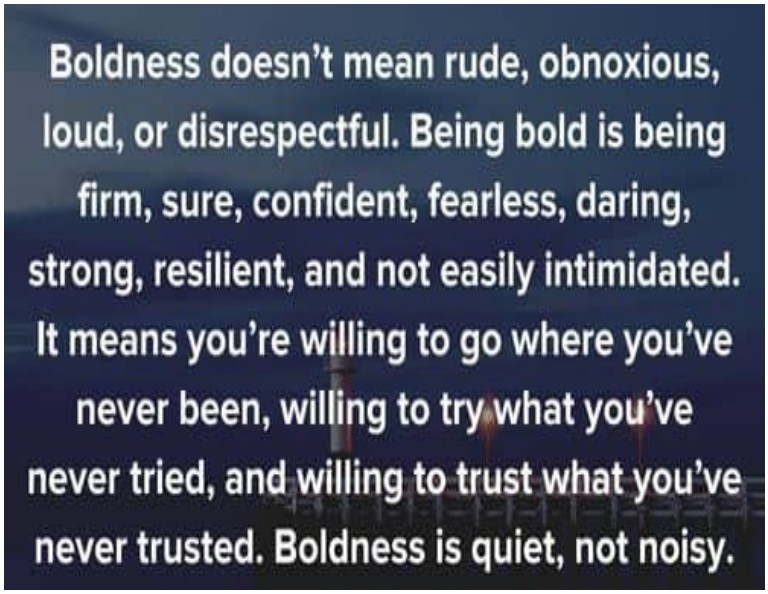

हमें प्रभु के लिए निडरता और साहस से काम करना चाहिए। हम उनसे कितना प्यार करते हैं? हम उनके लिए क्या करेंगे? हमें उनके लहू से धोना चाहिए और अपने जीवन में उनका अनुग्रह प्राप्त करना चाहिए। प्रेरितों के काम 4:13 ''जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का साहस देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो आश्चर्य किया; फिर उनको पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं।'' परमेश्वर ने हमें भय की आत्मा नहीं दी है, परन्तु साहस और निडरता की आत्मा दी है। हमारे परमेश्वर ने साहसपूर्वक हमारे पापों का क्रूस अपने ऊपर ले लिया और हमारे लिए अपना जीवन दे दिया। जब हम अपने प्रभु परमेश्वर को साहसपूर्वक स्वीकार करते हैं और अपना उद्धार प्राप्त करते हैं, तो स्वर्ग में आनन्द होता है। जब एक खोई हुई आत्मा मिल जाती है, तो स्वर्ग में हमेशा आनंद होता है।

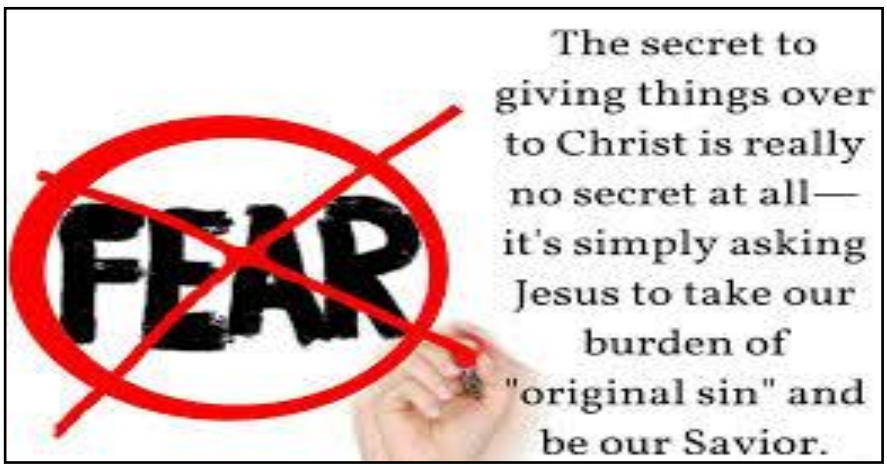

आइए खोए हुए सिक्के का दृष्टांत पढ़ें। लूका 15:7–10 ''मैं तुम से कहता हूँ कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द

होगा, जितना कि निन्यानबे ऐसे धर्मियों के विषय नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं। "या कौन ऐसी स्त्री होगी जिसके पास दस सिक्के हों, और उनमें से एक खो जाए, तो वह दीया जला कर और घर झाड़–बुहारकर, जब तक मिल न जाए जी लगाकर खोजती न रहे? और जब मिल जाता है, तो वह अपनी सखियों और पड़ोसिनों को इकट्ठा करके कहती है, 'मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरा खोया हुआ सिक्का मिल गया है।' मैं तुम से कहता हूँ कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने आनन्द होता है।''

अंत में, हमारा न्याय हमारे पिता के हाथों में है, और हमारा उद्धार स्वर्ग में मनाया जाएगा। 2 कुरिन्थियों 6:18 ''और मैं तुम्हारा पिता हूँगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियाँ होगे। यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है।'' हमारे सर्वशक्तिमान परमेश्वर, हमारे सृजनहार ने हमें अपने बहुमूल्य लहू से खरीदा है, और वह हमारे पिता होंगे, और हम उसके बेटे और बेटियाँ होंगे।

हमें अपने भीतर से सारे दोष दूर करने होंगे, तभी हम प्रभु के लिए निडर और साहसी बन सकते हैं। जब हमारे भीतर दोष होता है, तो हम दूसरों से खुलकर प्रेम नहीं कर सकते। हम एक–दूसरे से ईर्ष्या करेंगे, और एक–दूसरे की खुशियों में शामिल नहीं हो पाएंगे। हम अपने पापों में बने रहेंगे, और इस संसार में नाश होंगे। जब हम अपने भीतर से अपने अधर्म को दूर करेंगे और प्रभु को स्वीकार करेंगे और उनके लहू से धोए जाएंगे, तभी हम उनके बेटे और बेटियों के रूप में स्वीकार किए जाएंगे। इसलिए, हमें अपना जीवन परमेश्वर के हाथों में देना चाहिए। वह पक्षपाती परमेश्वर नहीं है कि कुछ को दण्ड दे और दूसरों को निर्दोष छोड़ दे। जब हमारे बच्चे गलतियाँ करते हैं, तो हम उन्हें सुधारते हैं। तो फिर हमें भी अपने जीवन में परमेश्वर के सुधार को क्यों स्वीकार नहीं करना चाहिए? परमेश्वर हमें सुधारते है और हमें सलाह देते है क्योंकि वह हमसे प्रेम करते है। जब हम परमेश्वर की सन्तान बन जाते हैं, तो शैतान हमारी भट्टी को सातगुणा और बढ़ा देगा, और हमें उस में डालने का यत्न करेगा; परन्तु हमारा परमेश्वर ही है जो हम को छुड़ाएगे और हमारा उद्धार करेगे। आज, एक बार फिर, परमेश्वर ने हमें एक और मौका दिया है कि हम अपने भीतर से अपने अपराध और शर्म को दूर करें और अपने जीवन को उनके हाथों में देकर निडरता और साहस से चलें।

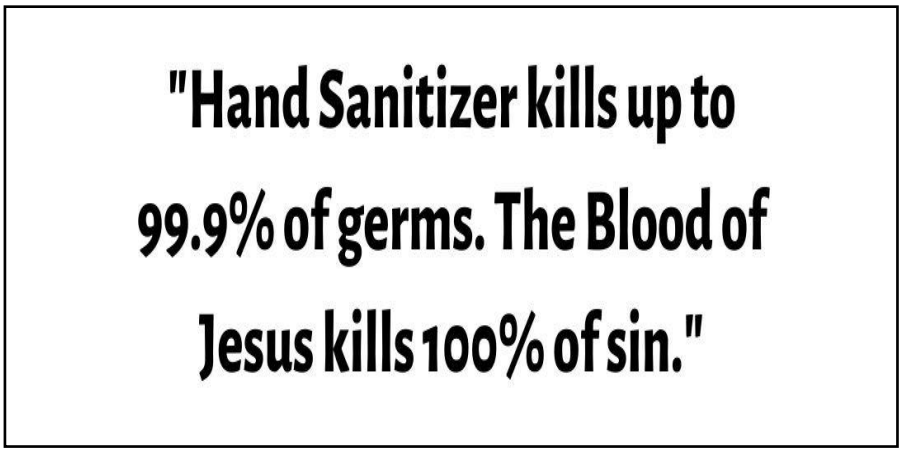

प्रभु इस वचन को आशीष दें! प्रभु की स्तुति हो !

पास्टर सरोजा म।